मूल्य रु. ५-००

सलंग अंक ९७ मई-२०१५

श्री स्वामिनारायण

मासिक

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महीने की ११ तारीख

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

(१) भुज मंदिर पाटोत्सव प्रसंग पर मेडिकल केम्प में आशीर्वाद देते हुए प.पू. बड़े महाराजश्री तथा केम्प में आये हुए एक वृद्ध हरिभक्त को सांत्वना देते हुए पू. बड़े महाराजश्री तथा साथ में महंत स्वामी ।(२) मेडिकल केम्प के लिये मंदिर में लगी लम्बी कतार तथा लाभ लेते हुए लोग । (३) केम्प प्रसंग में प.पू. बड़े महाराजश्री के साथ ब्रीटिश हाईकमिश्नर । (४) श्री स्वामिनारायण म्युजियम में अपने प्रागट्य दिन के निमित्त वृक्षारोपण करते हुए प.पू. बड़े महाराजश्री ।(५) श्री स्वामिनारायण म्युजियम में शास्त्रीय संगीत का आनंद लेते हुए प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. आचार्य महाराजश्री ।(६) कलोल में श्री नरनारायणदेव देश के पी.एस.एम. होस्पिटल का निरीक्षण करते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री । (७) मेरा की मुवाडी (पंचमहाल) मंदिर में पाटोत्सव प्रसंग पर ठाकुरजी का अभिषेक करते हुए जेतलपुर तथा अंजली मंदिर के संत ।

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - ९ ● अंक : ९७

मई-२०१५

संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स :
२७४१९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स : ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणेदव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत स्वामी)

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२
www.swaminarayan.info

पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०४
०२.	प.पू.ध.धु.आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०५
०३.	शिक्षापत्री सुदर्शन चक्र है	६
०४.	दीपज्योति नेमोस्तुते	८
०५.	प.पू.ध.धु.आचार्य महाराजश्री के मुख से अमृतवचन	९
०६.	प्रसादी के पत्रों का आचमन	११
०७.	"एलटकुं हजी पण मने विसरायुं नथी"	१४
०८.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	१६
०९.	सत्संग बालवाटिका	१८
१०.	भक्तिसुधा	२१
०९.	सत्संग समाचार	२३

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● प्रति कोपी ५-००

अस्मदीयम्

परमात्मा की लीला का कोई पार पा नही सकता । भगवान की भृकुटी हिलने मात्र से ब्रह्मांड हिलने लगता है । ऐसे अपने इष्टदेव भगवान स्वामिनारायण अनंत कोटि ब्रह्मांड के अधिपति हैं । भगवान अपने भक्तों की सदासहायता करते रहते हैं । चाहे जैसी भी कुदरती आपत्ति हो भगवान अपने भक्त की रक्षा करलेते हैं । विश्व में एकमात्र हिन्दू राष्ट्रवाला देश नैपाल अपने देश से सटा हुआ है । यहाँ पर मुक्तिनाथ भगवान के पुल्हाश्रम तीर्थ में अपने इष्टदेव परम कृपालु श्री स्वामिनारायण भगवान नीलकंठवर्णी के रुप में हाडकंपा देने वाली ठन्ढी में एक कोपीन पहनकर उग्र तप किये थे । उस छोटे से देश में ता. २५-४-१५ को प्रातः ११-३० बजे ७.९ स्केल पर धरतीकंप हुआ था । जिस में सबकुछ तहस नहस हो गया । अपने गुजरात के अनेक लोग वहाँ पर दर्शनार्थ गये थे, वे सही सलामत वापस आ गये ।

अपने देश की तरफ से तथा समग्र भारत देश की प्रजा ने नैपाल की प्रजा के लिये येनकेन प्रकारेण अनेक प्रकार की सेवा की धारा बहाई है । अभी भी वहाँ पर आफटर शोक चालू है । हजारों लोग मृत्यु के काल कवलित हो गये । अनेकों लोग घर से बेघर हो गये । अपने प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महराजश्रीने नैपाल का जनजीवन पूर्ववत स्वस्थ हो जाय तथा सभी का दुःख हल्का हो जाय इसके लिये परम कृपालु श्री नरनारायणदेव के चरणों में प्रार्थना की है ।

हम भी नेपाल की प्रजा के दुःख में सहभागी बने ऐसी श्रीहरि के चरणों में प्रार्थना ।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की

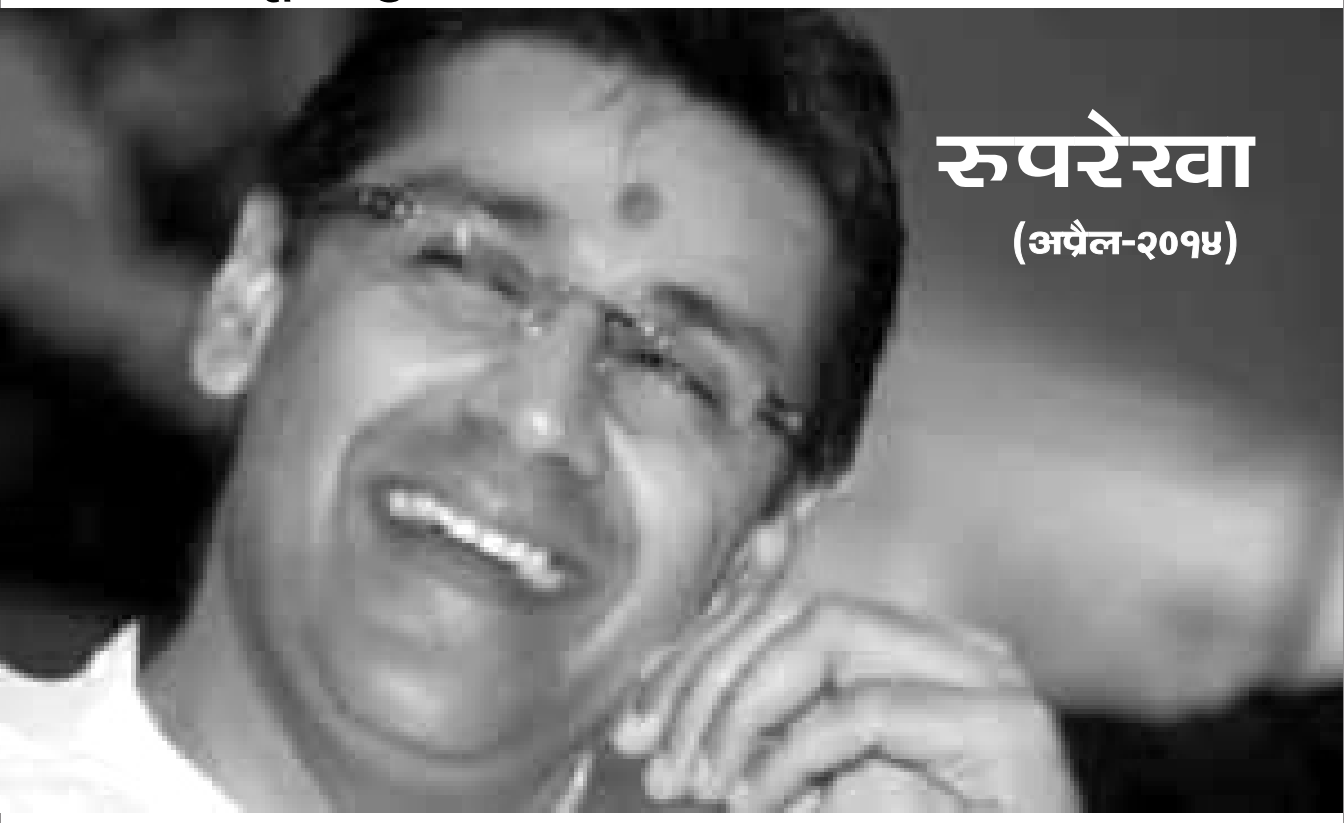

रुपरेखा

(अप्रैल-२०१४)

१८ श्री स्वामिनारायण मंदिर राणीप पदार्पण।

१९ श्री स्वामिनारायण मंदिर वक्तापुर पाटोत्सव तथा कथा प्रसंग पर पदार्पण।
सायंकाल - श्री स्वामिनारायण मंदिर मोटेरा पदार्पण।

२० श्री स्वामिनारायण मंदिर धरियावद (राज.) दशाब्दी महोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

२१ श्री स्वामिनारायण मंदिर उनावा पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

२२ भुज (कच्छ) पदार्पण.

२३ श्री स्वामिनारायण मंदिर भुज (कच्छ) पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

२४ श्री स्वामिनारायण मंदिर माणसा पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

२५ श्री स्वामिनारायण मंदिर हिंमतनगर पदार्पण।

२६ श्री स्वामिनारायण मंदिर भुज पदार्पण।

२७ श्री स्वामिनारायण मंदिर अंबाला (कच्छ) मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण।

२८ श्री स्वामिनारायण मंदिर आनंदपुरा (डांगरवा) पदार्पण।

३० श्री स्वामिनारायण मंदिर लालोडा (ईडर देश) पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

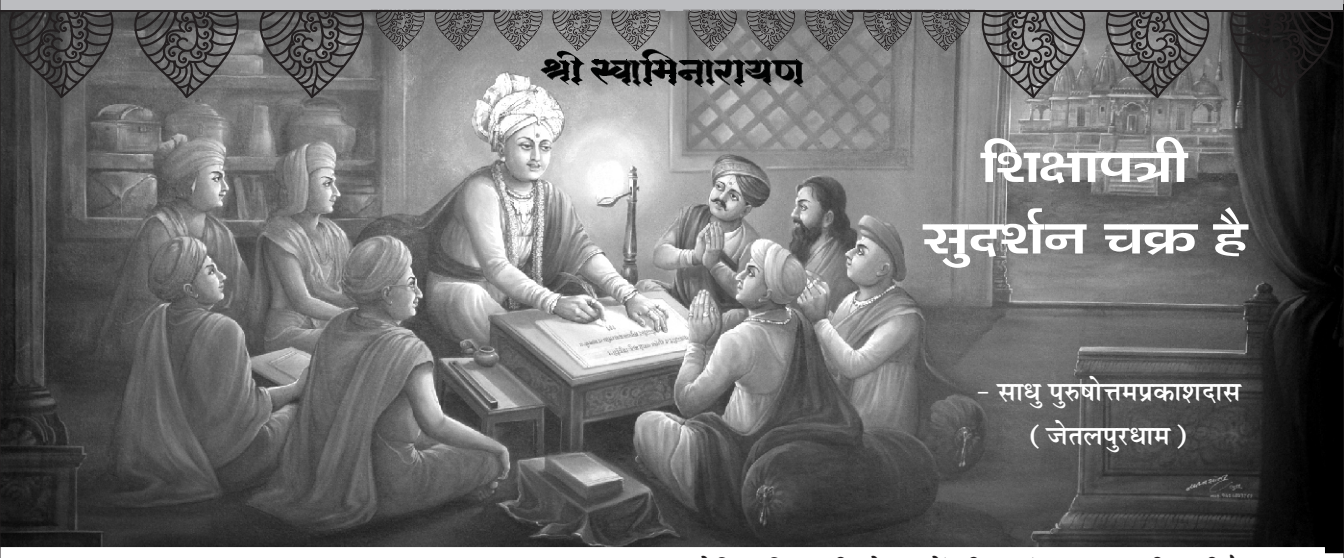

शिक्षापत्री सुदर्शन चक्र है

- साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास
(जेतलपुरधाम)

सर्वोपरि सर्वावतारी श्री सहजानंद स्वामी द्वारा संस्थापित श्रीम उद्धव संप्रदाय में शिक्षापत्री सर्वमान्य तथा सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ है । इस लघुकाय रचनामें महाप्रभुने इस लोक में मनुष्यों द्वारा संपादन करने लायक - धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष को प्राप्त करने के लिये बड़ी ही सरल उपाय बताये हैं . सं. १८८२ माघ शुक्ल वसंत पंमची के शुभ दिन श्रीजी महाराजने अपने हाथों से शिक्षापत्री ग्रन्थ का लेखन जीवमात्र के कल्याणार्थ लिखी है । इसमें सभी शास्त्रों का दोहन करके गृहस्थ सन्यासी, अबाल नरनारी के अनंकालकी कामना से आलोज्न किया है। अपने आश्रित सत्संगी मात्र के रक्षण हेतु २१२ श्लोको वाली सुदर्शन चक्र के समान अकल्पनीय शिक्षापत्री की रचना की है। यह शिक्षापत्री रुपी सुदर्शन सत्संगीमात्र का सर्वदा सर्वथा चारो दिशाओ से अमंगल, अनिष्ट, कष्ट, अविद्या, अंधकार, उच्चाटन, त्राटक, यमदूत भय, जन्म मरण का संकट नरक चौराशी की यातना, भय, कुसंग, क्लेश, रोग, दरिद्रता, कुसंप इत्यादि अनेकों प्रकार से नित्य निरंतर रक्षा करते हैं । इष्टदेव भगवान स्वामिनारायण ने शिक्षापत्री को अपने आश्रितों की रक्षा का भार सौंपा है। कुलदेव हनुमानजी तो प्रार्थना करने पर ही आते हैं लेकिन शिक्षात्री लो भक्तों की अखंड रक्षा करती रहती है । शिक्षापत्री के नियमका पालन करने वालों को कभी कष्ट नहीं आता है। इसी तरह शिक्षापत्री का जो नित्य पाठ करता है, पूजन करता है पाठके रुप में जो पुरश्चरण करता है, शिक्षापत्री का जो दान करता है शिक्षापत्री सुदर्शन की तरह रक्षा करती है।

गीता-भागवत, जिस तरह श्रीकृष्ण भगवान का आदर्श स्वरुप माना जाता है, भगवान श्री कृष्ण स्वधामगन के समय कहते थे कि मैं श्रीमद् भागवत के रुप में प्रगट हूं । उसी तरह यह शिक्षापत्री भगवान श्री स्वामिनारायण की अभिन्न रुपा प्रत्यक्ष ग्रन्थ है । इसी में अपने सिद्धांतो के लिये परम कल्याणकारी सन्मार्ग सिद्ध करने के लिये इससे भिन्न कोई अन्त ग्रन्थ नहीं है। ''लिखामि सहजानंद स्वामी'' इस पद से यह भासित होता है कि उन्होंने स्वयं इस ग्रन्थ का लेखन किया है। और स्पष्टता भी की है कि इस उक्ति का कोई अन्य अर्थ घटन नहीं करना । शिक्षापत्री में महाराजने जो आज्ञा की है उसका उल्लेख यहाँ नहीं किया गया है । शिक्षापत्री को आदर्श ग्रन्थ मानने से तथा पूजन करने से मनोकामना पूर्ण होती है। आत्मरक्षण मिलता है। यह बात वचनामृत में गढडा अंत्य प्रकरण के प्रथम वचनामृत में कहे हैं। जे

अमारी लखेली जे शिक्षापत्री तेनो पाठ अमारा आश्रित जे त्यागी-साधु तथा ब्रह्मचारी तथा गृहस्थ बाई-भाई सर्वे तेमणे नित्ये करवो । अने जेने भणतां (वांचा) न आवडतुं होय तेने नित्य श्रवण करवुं .अने जे न नित्य श्रवण करवानो योग न आवे तेने शिक्षापत्रीनी पूजा करवी । ए त्रणमांथी जेने फेर पडे तेने एक उपवास करवो एम अमारी आज्ञा छे । एवी रीतनी जे श्रीजी महाराजनी आज्ञा तेने पालवानो नियम सर्वे ए धर्यो जे, हे महाराज ! जेम तमे कही दो तेम अमे पालीशुं । तेने साभडीने श्रीजी महाराज अति प्रसन्न थईने ब्रह्मचारीने मड़ता हता अने सर्वे सत्संगीयोना हृदयमां पोताना चरणारविंद आपता हवा ।'' हे भक्तों ! शिक्षापत्री का वाचंन-श्रवण-पूजन को स्वीकार करने मात्र से यदि श्रीहरि प्रसन्न हो गये तो सत्संगी मात्र वांचन-श्रवण-पूजन प्रतिदिन स्वयं करने लगे वे कितना प्रसन्न होंगे । जो भी प्रतिदिन वांचन-श्रवण-पूजन करते है । उनको श्रीहरि गले लगाते हैं । आज भी वे अपने भक्तों पर प्रसन्न होकर उनके हृदय में चरणारविंद की छाप देते हैं । कहीं लोग आलस्य के कारण इस लाभ से वंचित हो जाते हैं । भक्तजन अवश्य करेंगे । पूजन-श्रवण जो भी हो सके वह अवश्य कीजियेगा । शिक्षापत्री के वचन का पालन ही श्रेष्ठ सुख को देने वाला है । अनेक प्रकार के लाभ हैं । यह श्रीहरि का वचन है । शिक्षापत्री की आज्ञा का पालन तो अवश्य कीजियेगा इसके साथ पठन-पूजन भी अवश्य कीजियेगा । शिक्षापत्री का जो पठन-पूजन करते हैं वे शिक्षापत्री रुपी सुदर्शन चक्र से सुरक्षित रहते तैं । शिक्षापत्री देखने मे छोटी अवश्य है लेकिन इस की महिमा अनंत है । सत्संग में उपलब्धहै लेकिन पठन-पूजन कठिन है । शिक्षापत्री श्रीहरि का वाङ्मय रुप है । घर में पवित्र जो स्थान हो वहाँ रखकर प्रतिदिन पूजन करना चाहिये ।

जिसके घर में शिक्षापत्री की प्रतिदिन पूजा होती है उसके घर में भूत-प्रेत-मारण-मोहन - उच्चारन का अनिष्ट तत्व प्रवेश नहीं करते । जो सत्संगी शिक्षापत्री का पूजन-पठन करते हैं उनके ऊपर मलिन विद्या का प्रयोग निष्फल जाता है । इस लिये शिक्षापत्री का नित्य पठन-पूजन अवश्य करें । महीने में एकबार शिक्षापत्री का पाठ अवश्य पूरा करें । जिस तरह कार्तिक शुक्ल-१ से प्रारंभ किये तो अमावस्यातक २१२ श्लोक पूरा कर देना चाहिये । उत्तम श्रद्धावाला पूनम को पूरा कर दे तो अमावास्या तक पाठ हो जाय । शिक्षापत्री श्लोक २०८-२०९ में श्रीहरिने स्पष्ट आज्ञा की है कि हमारे आश्रित इस शिक्षात्री का अवश्य पाठ करें । जो पढे न हों वे श्रवण करें यदि शिक्षापत्री वांचने वाला न मिले तो नित्य पूजन करना चाहिये । शिक्षापत्री मेरी वाणी है मेरा यह प्रत्यक्ष स्वरुप है । इसलिये इसे आदर के साथ संमानित की जियेगा । धर्मदेव - भक्तिमाता से जब श्रीहरि प्रगट हुये तब उनकी चार भुजाये थी । जिन चार भुजाओं में चार आयुधथे, वे चार आयुधप्रत्यक्ष नहीं रहते थे फिर भी सत्संग में परोक्षरुप से प्रगट है - (१) सुदर्शन के रुप में शिक्षापत्री (२) गदारुपी शस्त्र कुलदेव हनुमानजी को दिये (३) शंखरुपी शस्त्र धर्मवंशी आचार्य को दिये । (४) पद्म कमल स.गु. आनंदानंद स्वामी को दिये आनंदानंद स्वामी के जन्म से ही उनके दाहिने हाथ में कलम का चिन्ह था । इसीलिये महाराज उन्हे बड़े-बडे कार्य (मंदिर निर्माण इत्यादि का कार्य) उन्हीं को सौंपते जिससे धन की कमी नहीं होती थी ।

शिक्षापत्री का प्रतिदिन पाठ-पूजन करने वाले बालक-युवान इन सभी की विद्या बढती है । जिन्हें उत्तम

पेईज नं. १५

दीपज्योति नमोऽस्तु ते

- शास्त्री हरिकेशवदासजी

अपने शास्त्रो में भगवान के आगे दीपक जलाने की बहुत महिमा है। दीपज्योति के दर्शन से धनसम्पत्ति-आरोग्य की प्राप्ति होती है। द्वेष बुद्धि का नाश होता है। इसमें भी गाय के घी का दीपक किया जाय वह विशेष फलदायी है । भगवान के आगे दीपक जलाने से दीपदाता का पुण्य बढता है और शत्रु के बल का नाश होता है।

शुद्ध घी का दीपक सात्विकता का प्रतीक है। मन में हकारात्मक विचार के लिये यह उत्तम उपाय है। दीपक की लौ उत्तम विचारों की तरफ ले जाती है। अर्थात् निराश, हताश व्यक्ति को निराशा - हताशा से मुक्ति मिलती है।

अपने इष्टदेव स्वामिनारायण भगवान सत्संगिजीवन में प्रभु के आगे दीपक प्रगट करने की आज्ञा की है।''घृतदीपा: प्रभोरग्रे कर्तव्या निशि शक्ति:''

इसके अलांवा दीपक को देव का स्वरुप कहा गया है।

''भो दीप: देवस्वरुप सात्वं कर्म साक्षीहयविध्नकृत्'' इष्टदेव के सामने जो भी सत्कर्म करें उन सभी का साक्षी दीपक होता है। पद्मपुराण तो यह भी कहता है कि इष्टदेव के आगे दीप दान करने से असद्गति को प्राप्त पितरो का उद्धार होता है । इसीलिये तो दीपज्योतिको प्रणाम किया जाता है -

''शुभं करोतु कल्याणं आरोग्यं धन सम्पदा।
शत्रुबुद्धि विनाशाय, दीपज्योति नमोऽस्तुते।
दीपज्योति: परंब्रह्म दीपज्योति जनार्दन:।
दीपो हरतु मे पापं दीपज्योति र्नमोऽस्तु ते ॥''

अपने इष्टदेव भगवान स्वामिनारायण अमदावाद में सर्व प्रथम श्री नरनारयणदेव इत्यादि स्वरुपों की प्राण प्रतिष्ठा किये उसी समय प्रभु के आगे दीपक प्रगट किये, उस दीपक की अखंड ज्योति दो सौ वर्ष से अखंड चालू है परंतु सावधानी पूर्वक विचार करने की बात यह है कि कितने भाई-बहन श्रद्धालु इस दीपक को प्रज्जवलित रखने के लिये भी लाते है, परंतु घी की शुद्धता है या नहीं एक प्रश्न है। आज के भेड़ सेड वाले युग में अस्पृश्य वस्तुओं को भी घी मे मिला दिया जाता है। ऐसी अपवित्र घी से पुण्य की प्राप्ति नहीं होती, बल्कि दोष के भागी होते हैं।

इस अपराधसे बचने के लिये, शास्त्रों में किये पुण्य की प्राप्ति के लिये प.पू. बंदनीय बड़े महाराजश्री के हृदय में श्री नरनारायणदेव की अखंडदीप की शुद्धता पवित्रता बनी रहे दीपदाता सदा सुखी बने रहें इसके लिये एक उत्तम विचार आया है।

बाजार में जो भी घी बिकता है वह शुद्ध नहीं होता अत:अनजान स्थान से घी न लाकर अपने संकल्प के अनुसार - शक्ति के अनुसार दीपक के घी की जगह पर आर्थिक दान मंदिर में करके वहाँ से पक्की रसीद ले लें। बाद में मंदिर की तरफ से आचार्य महाराजश्री की आज्ञा के अनुसार गाय का शुद्ध घी लाकर दीपक में डालने का विचार किया गया है। जिससे शुद्ध श्रद्धा गायके घी की ज्योति से प्रभु को समर्पित कर सकें।

इसके अलांवा आप सभी को यह जानकर आनंद

पेईज नं. १०

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के मुख से अमृतवचन

संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)

एप्रोच (बापुनगर) मंदिर का दशाब्दी महोत्सव प्रसंग पर ता. २६-२-१५ : हम अपने शरीर की जितनी चिंता करते हैं उससे अधिक यदि अन्त:करण तथा अपने मन को स्वच्छ रखें यह जरुरी है। वर्तमान में स्वाईनफ्लु का प्रकोप चल रहा है। इसका वायरस कहीं हमे न लग जाय इसका ख्याल सभी रखते हैं। भगवान की इच्छा के अधीन सभी लोग रहते हैं। किसी निमित्त कब देह का अन्त आजाय क्या पता। इसलिये कितना जीये उसकी अपेक्षा कैसे जीये यह महत्व का है।

रोग का नाम बदलता रहता है। इसके पहले चिकनगुनिया आया। इसके बाद डेन्ग्यु आया, वर्तमान में फ्लु का प्रकोप चल रहा है। हमें बाहर के जीव परेशान करते हैं इसकी अपेक्षा अन्त:शत्रु अधिक परेशान करते हैं। इन्हे दूर करने के लिये कोई दवा अथवा शस्त्रकाम में नही आते। खराब स्वभाव-प्रकृति-क्रोध-मान इत्यादि अन्त:शत्रुओ को दूर करने के लिये दृढ सत्संग की जरुरत होती है। कितने पूर्व के स्वभाव कितने जन्मो में दृढता के साथ घर करके बैठे हैं। कितने स्वभाव इस जन्म में खराब संगत के करके बिगडते हैं। कुसंग छोडकर सत्संग करें तो जन्म से पड़ा हुआ कुसंग-कुसंस्कार निकलने में देर नहीं लगेगी। महाराजने वचनामृत में कहा है कि बरसात पड़ने पर दीवाल के ऊपर भी घास निकल आती है, लेकिन वह घास कुछ दिन के लिये होती है। धूम होते ही सुख जाती है, कारण यह कि उसकी मूल बहुत नीचे तक नहीं होती, परन्तु खेत में जो घास उगती है उसकी मूल बहुत नीचे तक होती है जिससे किसान उसे काट कर आग लगाता है तो भी बरसात होने पर पुन: उग निकलती है। इसके बाद भी किसान कुहाली से खोदकर उसकी जड़ निकालता है फिर वह उगती नहीं है। इसी तरह अपनापूर्व का दृढ स्वभाव प्रकृति को दूर करने के लिये दृढ प्रीति, दृढ सत्संग, कथाश्रवण तथा संत समागम

की खूब जरुरत होती है।

एप्रोच मंदिर में सात संत रहते हैं, महंत स्वामी, कोठारी स्वामी इत्यादि इस विस्तार के सत्संग को हराभरा रखे हैं। निर्गुणदासजी स्वामी जैसे विद्वान संत आप सभी को अवार-नवार भगवान की कथा का श्रवण कराते रहते हैं। मंदिर बनाना सरल है परंतु मंदिर के निर्माण के बाद उसका रखरखाव करना बड़ा कठिन है। यहाँ के युवक मंडल सेवा करने में खूब सक्रिय हैं। गादीवालाजी हमसे कई बार कहती रहती है कि यहाँ की कितनी बहने भी गाँवो में जाकर सत्संग कराती है। यह भी आनंद की बात है।

वर्तमान समय में सत् शास्त्रो के वांचन में लोगों की रुचि कम होती जा रही है। समय कम है, तथा लोगों में इच्छा भी कम होती जा रही है। ऐसे समय में कथा श्रवण बहुत जरुरी है। आज के जमाने में सभी को अन्य सब कुछ्याद रह जाता है लेकिन भगवान की कथा सुनने के बाद कथा में आये हुये प्रसंग याद नहीं रहते। इस परिप्रेक्ष्य में संतो के जीवन को देखें तो कितना प्रकाश से भरा हुआ है। यहा के मंदिर द्वारा प्रकाशित आजजो हिस्मॉति पुस्तिका का विमोचन हुआ है उसके वांचने से ख्याल आयेगा कि स.गु. निष्कुलानंद स्वामी इत्यादि नंद संतो का श्रीहरि के साथ कितना प्रेम, कितनी भक्ति, तथा कितना अहोभाग्य थी कि उन लोगों ने महाराज का दर्शन, भोजन करते हुए, स्थान करते हुए, या अन्य लीला करते हुए देखा और वैसा ही अपने लेख में वर्णन किया है। इसलिये यह पुस्तिका सभी लोग अवश्य बाचियेगा आप लोग वांचियेगा, मनन करियेगा। पांच रुपये की कोई कींमत नहीं है। ५०००० रुपये का मोबाइल जेब में रखकर माथे का दुखावा बना पड़ा रहता है, उस समय महाराज का स्मरण कराने के लिये यह पुस्तिका का अत्यन्त उपयोगी है।

आज परिस्थिति ऐसी है कि स्वंय भगवान के नाम स्मरण के बदले महाराज की मूर्ति वाली मशीन लाकर (चालू कर देते हैं और वह मशीन स्वामिनारायण स्वामिनारायण बोलने लगती है। महाराज को कहते हैं कि आप अपना नाम सुना कीजिये। हमहारे पास नामोच्चारण करने का समय नहीं है। अच्छा है, समय के अनुसार येन केन प्रकारेण भगवान का नाम स्मरण तो हो रहा है। हकीकत में तो नाम स्मरण करते हुये मूर्ति का ध्यान करते हुए एकाग्रमन से धुन करनी चाहिये।

अंत में प.पू. महाराजश्रीने आशीर्वाद दिया था।

अनु. पेईज नं. ८ से आगे

होगा कि इस कार्य की पहल स्वयं प.पू. बड़े महाराजश्रीने ५०,०००/- पचास हजार रुपये श्री नरनारायणदेव को अर्पण कर दिया है। यह सत्संग समाज के लिये प्रेरणारुप है।

इसके अलांवा सदा प्रत्यक्ष श्री नरनारायणदेव के आगे का दीपक का स्थान जैसे-तैसे न रहे इसके लिये प.पू. बड़े महाराजश्री की प्रेरणा से परम भक्त श्री पूनमभाई मगनभाई पटेलने सुंदर दीपक स्थान बनाकर प.पू. बड़े महाराजश्री के वरद् हाथों से देव को समर्पित किया है।

यह लेख बांचकर सभी भक्त उपरोक्त विषय पर विचार कर पूज्यपाद बड़े महाराजश्री के इस आयोजन में सेवा समर्पण करके श्री नरनारायणदेव की कृपा, सुख, आशीर्वाद तथा मोक्ष के अधिकारी बनें।

प्रसादीना पत्रोनुं आयमन

- प्रो. हितेन्द्रभाई नारणभाई पटेल (अमदावाद)

मूलपत्र :

लिखावंत स्वामी श्री सहजानंद महाराज जगत मंदिरना अधिकारो स्वामी तथा ब्रह्मानंद स्वामी तथा नित्यानंद स्वामी तथा आनंदानंद स्वामी तथा अक्षरानंद स्वामी तथा आत्मानंद स्वामी तथा गुणातीतानंद स्वामी तथा मंदिर के अधिकारी समस्त नारायण वांचजो ।

बीजुं लखवा कारण एम छे जे आपणा जे सर्वे मंदिर छे, तेमां कोईनुं करज न करवुं तथा कोईनी थापण न राखवी । तथा कोई व्यापारीनी हाढे परचुरण नामुं न करवुं तथा दाणा न वेचवा तथा सदाव्रत न बांधळुं अे; दाणा सली (सडी) जता होय तो ते वेचीने नवा लेवा अने वेपारीने हाटे हरकोई जणस वोरवी होय तो रोकडा रुपैया आपीने वोरवीने रुपैयानो जोग न होय तो ठाकुरजीना थालने अर्थे पण नामुं तो न ज करवुं ने जेवी पोताना कोठारमां पहोंच होय ते प्रमाणे ठाकोरजीने नैवेद्य धरावबुं तथा उत्सव निमित्त वावरवुं । ते श्रीकृष्ण भगवान गीताजीमां कह्युं छे - श्लोकः - पत्रं पुष्पं फलं तोयं यो मे भक्त्याप्रयच्छति तदहं भक्तयुपकृतमन्नाभिप्रयतात्मनः ॥ बीजुं आ कागल मां जे अमें लख्युं छे ते प्रमाणे सर्वने सावधान थईने वरतवुं ने आथी विसेष जे वरतावानी रीत ते तो अे शिक्षापत्रीमां लखी छे । ते जोईने ते प्रमाणे वरतवुं । बीजुं आ लख्या प्रमाणे जे नहीं वरते ते अमारो सत्संगी नथी ने ते वचन द्रोही गुरु द्रोही छे । संवत १८८५ ना पोष सुदी-४

भगवान श्री स्वामिनारायण द्वारा लिखवाया गया यह असलपत्र आज भी अमदावाद श्री नरनारायणदेव देश की गादी के ६ठ्ठे पीठाधिपति प.पू. आचार्य श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के दिव्य संकल्प के अनुसार निर्मित ''श्री स्वामिनारायण म्युजियम'' के होल नं. ९ में सत्संगी मात्र के दर्शनार्थ रखा गया है ।

विवरण : भगवान श्री स्वामिनारायण मंदिरका अधिकारी कौन ? उन्होंने नामोल्लेख पूर्वक यह बताया है कि - मुक्तानंदादि सभी संत गण इस मंदिर के अधिकारी है । आज के जमाने के अनुसार कहें तो चेरीटी कमिश्नरश्री, सरकारी अमलदार, मंदिर के नौकर या ट्रस्टी गण सहित कोई अधिकारी नहीं है । श्री स्वामिनारायणने देश विभाग का लेख स्वयं लिखवाकर धर्मवंशी आचार्यों को मंदिर का विभाजन करके अर्पण किया है । जिसे संत निष्कामभाव से मात्र जीवों के कल्याणार्थ अपने जीवन को कृष्णार्पण करके मंदिरो का निर्माण किया है ऐसे संत ही सच्चे रखवाले हैं । श्रीजी महाराजकी उपस्थिति में नंद-संतोने महाराजकी आज्ञा

में - मार्गदर्शन में कार्य किया है । आज भी उसी प्रणालिका नुसार वर्तमान समय में संत-महंत प.पू.ध.धु. आचार्यमहाराजश्री की आज्ञानुसार मार्गदर्शन में मंदिरो का निर्माण कार्य करते है । जिस तरह भगवान स्वामिनारायण के स्थान पर धर्मवंशी आचार्य महाराजश्री है उसी तरह नंद संतो के स्थान पर आज के संत हैं । इसकी समज सभी को रखना पडेगा । संप्रदाय के इतिहास में कोई नंद संत कभी भी कोई स्वयं की संस्था खड़ी नही की है । इसी लिये वे रनिर्लेभी, निष्कामी संतो को स्वयं भगवानने मंदिरों का अधिकारी कहा है । मंदिरों का अधिकारी होने कीजरुरत नहीं है - बल्की मंदिर के विषय में आत्मबुद्धि की जरुरत है । जिस तरह गृहस्थो को अपने घर में आकस्मति होती है उसी तरह संतो की भी अपना मंदिर है ऐसी आत्मबुद्धि होनी चाहिये । अपने यदि शक्ति हो तो प.पू. महाराजश्री की आज्ञा में रहकर बड़े संतो-हरिभक्तों के साथ में रहकर कार्य करेंगे तो श्रीहरि की कृपा मिलेगी । परंतु सत्ताके स्थान पर बैठकर प्रसाद की वस्तु खाकर, माला पहनकर या धर्मादा का लेकर इस जीव की कभी उन्नति नहीं हो सकती, बल्कि अधोगति होगी ।

भगवान स्वामिनारयणने मंदिरों का निर्माण करवाया फिर भी वे लिखावाते हैं कि ''अणने मंदिरो ..... अर्थात् महाराज स्वयं सम्पूर्ण संप्रदायके संत-हरिभक्तों को अपना समझते थे । यह संप्रदाय के लिये आत्मबुद्धि की पराकाष्ठा कही जायेगी । आज तो बाप-बेटा, भाई भाई के बीच मेरा और तेरा का भाव दिखाई देता है । इस स्थिति में संप्रदाय अपना कुटुंब है ऐसी भावना स्वयं श्रीहरि में थी । इस तरह की भावना आज हम सभी में भी होनी चाहिये । इसी में श्रीहरि की कृपा समाई हुई है ।

मंदिर के अधिकारी, कोठारी, महंत इत्यादि का कभी कर्ज नहीं करना चाहिये । कर्ज लेने वाले को सदा उसके अधीन रहना पड़ता है । आज के युग में भगवान को एक रुपया देकर लाखों मांगने वालों की संख्या है । तन-मन-धन से सेवा करने की वात कही गयी है । लेकिन कर्ज लेने की वात कहीं नही उल्लिखित है ।

किसी की थाती नहीं रखनी चाहिये । हरिभक्तों को यह समझना चाहिये कि मंदिर में जो भी वस्तु दी गयी है वह सब कृष्णार्पण है । अर्थात् अब वह लेने योग्य नहीं है । आचार्य महाराजश्री योग्य लगेगा वहाँ पर उसका उपयोग करेंगे । महाराज को धनिकलोग जो भी धन-सुवर्णादिक दान में देते उसे महाराज उसी समय ब्राह्मणों में दान दे देते थे । यह देखकर भक्त कभी दुःखी नहीं होता था बल्कि आनंदित होता था । दिये दान में से प्रसाद के रुप में भी मिलता हो तो उसे नहीं लेना चाहिये । यही उत्तम कोटी सत्संगी का लक्षण है, इसमें श्रीहरि की प्रसन्नता है ।

व्यापारी के यहाँ लेने देने का काम नहीं करना चाहिये । मंदिर में देना चाहिये, दी हुई वस्तु में अपना अधिकार नही, यह भी कभी नही सोचना चाहिये कि मैने जो भी द्रव्य दिया यहाँ नही देना चाहिये था, इस प्रकार छुद्र विचार आदमी को पतित करता है । स्वयं को भाव को पवित्र रखना चाहिये । जो चींटी को मार सकता है वह मनुष्य को भी मार सकता है, इसी तरह जो छोटा अपराधकर सकता है वह बड़ा अपराधभी कर सकता है । आज्ञा का उल्लंधन कभी नहीं करना चाहिये, चाहे वह शिक्षात्री की आज्ञा हो या आचार्य महाराजश्री की आज्ञा हो । आज्ञा उल्लंधन से अपना कल्याण बिगडजायेगा ।

''दाना नही वेचना'' इसका मतलब यह कि जो दान में आवे वह अनाज हो या अन्य कोई वस्तु हो उसका व्यापार नहीं करना चाहिये । वह हरिभक्तों के लिये उपयोग करना चाहिये । दान में या देव पूजा में जो वस्तु

मिली हो उसे बेचकर नफा कमाने की वृत्ति अच्छी नहीं है । उसका संप्रदाय में उपयोग करना चाहिये । इसका उपयोदोंनो के लिये किया जाय तो कोई बाधा नही है । सदाव्रत नहीं चलाना चाहिए अर्थात् जो वश्यक वस्तु हो अपने व्यवहार से अधिक हो तो अन्य को देने मे कोई तकलीफ नही है । सत्संगियो से धन एकत्रित करके कुसंगी में देंने से कोई फल नहीं मिलेगा । श्रीहहिने भी सदाव्रत चालू किया था लेकिन उस समय सदाव्रत का दुरुयोग देखकर महाराज ने उसी समय बन्द कर दिया था । अभयदान की प्रथा प्रारंभ किये, मंदिरो में तीर्थ वासियो को खिलाते यह प्रथा आज भी चालू है . एक मात्र स्वामिनारायण के मंदिरो में ही जाति के भेद भाव को छोडकर गरीब-अमीर के भेदभाव को छोडकर तीर्थासियों को मिष्ठान्न के साथ देव का प्रसाद भोजन के रुपये में दिया जाता है । यह स्थिति सदाव्रतसे भी ऊंची है ।

क्रमशः

श्री नरनारायणदेव समक्ष अखंड दीपक में सेवा करने के सन्दर्भ में

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से सभी हरिभक्तों को सूचित किया जाता है कि अमदावाद श्री स्वामिनारायण मंदिर में परम कृपालु श्री नरनारायणदेव के समक्ष अखंड दीपक प्रज्ज्वलित रहने के लिये सभी भाई-बहन घी लाती हैं । जिसकी शुद्धता पर विश्वास नहीं रहता, जिस में अनेक प्रकार की अस्पृश्य वस्तुओं को मिला दिया जाता है, जिससे ऐसे अपवित्र घी के दीप दान से पुण्य नहीं मिलता, यह शास्त्र प्रमाण है । इसलिये आप सभी अपनी शक्ति के अनुसार अमदावाद मंदिर में आर्थिक दान करके पक्की पहुंच प्राप्त करले । मंदिर की तरफ से गाय के शुद्ध घी की व्यवस्था करके अखंड दीपक में प्रयोग किया जायेगा ।

श्री नरनारायणदेव के २४ कलाक दर्शन के लीये देखिये वेबसाईट

www.swaminarayan.info

www.swaminarayan.in

भारतीय समय अनुसार आरती दर्शन : मंगला आरती ५-३० ● शृंगार आरती ८-०५ ● राजभोग आरती १०-१० ● संध्या आरती १८-३० ● शयन आरती २०-३०

श्री स्वामिनारायण मासिक में प्रसिद्ध करने के लिये लेख, समाचार एवं फोटोग्राफ्स ई-मेईल से भेजने के लिए नया एड्रेस

shreeswaminarayan9@gmail.com

"ए लटकुं हजी पण मने विसरायुं नथी"

- अतुल भानुप्रसाद पोथीवाला (अहमदावाद)

गतांक से (दलपत शृंखला-२)

गुजराती प्रजा से ''कवीश्वर'' की प्रशस्ति प्राप्त करने वाले दलपतराम के ये शब्द हैं। ७० वर्ष की प्रौढावस्था में भी उन्होंने ये शब्द कहे हैं। वात इस तरह है -

विक्रम संवत १८८४ की वसंत पंचमी को दलपतराम का उपनयन संस्कार हुआ था। उस समय वे ९ वर्ष के थे। उस वसंत पंचमी को वे ब्राह्मण हुये। ब्राह्मण भाव में सोरठ में घूमने लगे। दक्षिणा भी मिलती और देशाटन भी होता। प्रथम ब्राह्मण पर्यटन में ही दलपतराम को दक्षिणा में साक्षात् हरिदर्शन हुआ।

फाल्गुन शुक्ल अष्टमी (संवत १८८४) को गढडा में कनका तरवाडी की माता की वर्षी थी इस उपलक्ष्य में वढवाण से श्रीजी गढडा आये हुये थे। दलपतराम के पिता डाह्या वेहिया भी उन्हीं के साथ आये थे उनके साथ पुत्र दलपतराम भी आये हुये थे। संवत १८८४ की शिवरात्री को जूनागढ में श्रीहरि ने यह उत्सव किया था। इसके बाद श्रीजी महाराज गढडा पधारे। ब्राह्मणों ने यह वात सुनी कि श्रीजी महाराज पधार रहे है, इस लिये सभी ब्राह्मण शोभायात्रा देखने नहीं गये। संध्याकाल का समय था। श्रीजी महाराज माणकी के ऊपर सवार थे। संत-हरिभक्तों का समुदाय साथ चल रहा था। सभी कीर्तन गाते चल रहे थे। धीरे-धीरे शोभायात्रा आगे बढ रही थी। बाजार के बीच चौक में कुछ क्षण के लिये शोभायात्रा रुकी ऐसा लग रहा था कि गाँव को कह रही हो, कि श्रीजी महाराज आये हैं। श्रीजी की सवारी दादा खाचर के दरबार में पदार्पण की। पिता डाह्याभाई तथा साथ में उनका पुत्र एवं सभी ब्रह्म समुदाय दरबार में श्रीजी महाराज के दर्शनार्थ गया। बाहर के बरामदे में महाराज गद्दी - तकिया लगवाकर विराजमान थे। बढवाण के भूदेवों को सभा में आते देखकर श्रीजी महाराज के हाथों से उनका आलिंगन किया गया। श्रीहरि की अलौकिक मूर्ति बालक दलपतराम की आंखो में वस गई।

ब्रह्म समाज को देखकर महाराज ब्रह्मोपदेशक वात करने लगे। ब्राह्मण बहुत प्रसन्न हो गये। सभी के मुख से श्रीजी महाराज के जय जयकार की ध्वनि उच्चरित होने लगी। उसी समय श्रीहरिने प्रश्न किया कि आप लोग भूदेव हैं, पूज्य है, पंचवर्तमान धारण करते हैं ? ब्राह्मण पंचवर्तमान पाले तो अन्य वर्ण के लोग भी इसका पालन करें। हम किसी अधर्म का उपदेश नहीं

करते । शास्त्र संमत बात करते हैं । हम शास्त्र को प्रतिष्ठापित करने आये हैं । शास्त्र तथा ब्राह्मण हमारे लिये सदापूज्य हैं । इस तरह के सुंदर वचन सुनकर पंचवर्तमान धारण भी कर लिये । आठ वर्ष के दलपतराम को श्रीजी महाराज का यह पहला तथा अन्तिम दर्शन था । परंतु यह प्रथम दर्शन के अवसर पर श्रीजी महाराज दलपतराम को एक जीवन का पाथेय देते गये । बालक के कोमल हृदय में श्रीहरि की सौम्य मूर्ति अंकित हो गयी ।

सम्पूर्ण संप्रदाय जानता है कि माणकी घोड़ी श्रीजी महाराज की बहुत प्रिय थी और भगुजी श्रीजी के सबसे प्रिय पार्षद थे ।

शोभायात्रा जब दरबार में संपन्न हुई उसी समय सहजानंद स्वामी माणकी से उतरकर हाथ बढाकर भगुजी से कहने लगे कि भगुजी ! घोडी को पावरयुक्त कीजियेगा । सादी वात और सादी कडी थी । परंतु बालक दलपतराम के अंतर में उपरोक्त सभी बातें हृदय कर गयी । इसलिये कविदलपतराम ७० वर्ष की उम्र में भी लिखते हैं कि ''ए लटकुं हजी पण मने विसरायुं नथी ।'' संप्रदाय में यह प्रसंग है कि स्वामी तुलसीदासजी जब ४० वर्ष के थे उस समय वे काशी की यात्रा करने निकले । वे रास्ता भूल गये, एक गाँव के किनारे (बाहर) कुछ स्त्रिया पानी भर रही थी । स्वामीने उन स्त्रियों से काशी का मार्ग पूछा, वे स्त्रियां युवान थी, नख से शिख तक सुंदर थी मस्तक पर झुककर घड़ा रखते हुये कहीं कि ''स्वामी आमनी कोरे चाल्या जाव काशी आवशे'' दूसरे चालीश वर्ष के बाद स्वामी ८० वर्ष के थे उस समय स्वामी मुक्तानंद से खुले मन से वात की कि ''स्वामी आजभी ८० वर्ष में भी उस स्त्री का लटकुं तथा लहेकुं अन्तर में से हटता ही नहीं या विसरता ही नहीं ।

यह मायिक लटका की तथा लहेका की वात है । यदि मायिक लटकुं इतना पावरफुल है तो परमेश्वर का लटकुं कितना पावरफुल होगा । कवीश्वर दलपतराम आगे लिखते हैं कि सत्य पूछो तो स्वामी श्री सहजानंदजी की वह मुद्रा इतनी आकर्षक थी कि ७० वर्ष की उम्र में भी भूल पाना बड़ा कठिन है । बात माणकी घोड़ी को पावर चढाने की थी, लेकिन श्रीहरि का वह अलौकिक हावभाव तथा छोटा सा एक वाक्य कविदलपतराम को श्री स्वामिनारायण संप्रदाय अंगीकार करने के लिये आह्वान करता गया । यह आगे के अंक में दिया जायेगा।

(क्रमशः)

अनु. पेईज नं. ७ से आगे

शिक्षाप्राप्त करनी हो वे शिक्षापत्री का अवश्य पाठ करें । इसका उन्हें चमत्कार दिखाई देगा ।

श्रीजी महाराजे स्वंय जिन शास्त्रों का वर्णन किया वे - (१) शिक्षापत्री (२) वचनाम-त (३) देश विभाग का लेख । शिक्षापत्री का इन चमत्कार है तो इसकी आज्ञा का पालन करने में अनंत लाभ समाया हुआ है । इसलिये सभी सत्संगियों को चाहिये कि २१२ श्लोको वाली शिक्षापत्री की शरणागति अवश्य स्वीकार करें । इससे वे सर्वदा कष्ट भय से रहित हो जायेगा । एक शिक्षापत्री का दैवी मनुष्य को दान करने से गोदान के बराबर फल मिलता है ।

''स्वामी की वात'' में लिखा है कि एक भक्तराज अम्बरीष राजा की भक्ति के वशीभूत होकर भगवानने उनकी रक्षा के लिये सुदर्शन चक्र प्रदान किया था, लेकिन भगवान स्वामिनारायणने अपने सभी सत्संगियो की रक्षा के शिक्षापत्री रुपी सुदर्शन चक्र सदा के लिये दिये है ।

श्री स्वामिनारायण म्युझियम

श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से

योग विद्या से लेकर प्रत्येक शास्त्र के जानकार एवं कला के जानकार श्रीजी महाराज संगीत के भी उतने ही जानकार थे । संगीत में उतनी ही चाहना थी । दूर दूर से संगीतकार अपनी संगीत कला का महाराज के सामने प्रदर्शन करके स्वयं को धन्यता का अनुभव करते थे । अपने नंद संत भी संगीत कला में प्रखर विद्वान थे । एकवार गढपुर में दादा खाचर के दरबार में नींम वृक्ष के नीचे इसी तरह की संगीत संध्या का आयोजन महाराज की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ था । लखनऊं के उस समय भारत में प्रख्यात संगीतकार अपने गायन तथा वाद्य में प्रवीण वे संतो के साथ जुगलबंदी करने के लिये आये हुये थे ।

जिसने संगीत विद्या सीखी हो, जिसने सुर सीखा हो उन्हीं के समक्ष उसी विद्या का प्रदर्शन करने का अवसर मिले तो कौन ऐसे अवसर को छोडेगा । सभी प्रसन्न होकर अपनी कला का प्रदर्शन श्रीहरि के समक्ष किये । निर्जीव ऐसे निंमवृक्ष को भी सभी हिला दिये । मुक्तानंद स्वामी ने संगीत के ताल के साथ पैर के कुमकुम से हाथी का चित्र बना दिया । प्रेमानंद स्वामी ''दीखला दी दार प्यारा महेबूब हमारा'' की शीघ्र रचना करके लखनऊ के गायकों के अभियान को तोड़दिया था । यह प्रसंग तथा इस प्रसंग से युक्त प्रसादी की वस्तुओं को हाल नं. ४ में प्रदर्शित किया गया है ।

ऐसी संगीत प्रेम की परंपरा धर्मकुल में भी स्वाभाविक ढंग से उतर आयी है । आदि आचार्य श्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री के कीर्तन संप्रदाय में प्रचलित है । इसके अलावां प.पू. आचार्यश्री देवेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री भी भारत के उत्साह गायकों को अपने निवास स्थान पर बुलाकर संगीत का आनंद लेते थे । इसके साथ ही उन प्रतिष्ठित गायको का संमान भी करते थे । इसी परंपरा को आगे बढाने का कार्य अपने प.पू. बड़े महाराजश्री ने भी किया है । प.पू. बड़े महाराजश्री भी संगीत के प्रेमी ही नहीं है बल्कि संगीत के जानकार भी हैं । (श्री स्वामिनारायण म्युजियम में जो संगीत स्वर बजता है वह प.पू. बड़े महाराजश्रीने पसंद किया है ।) अभी वर्तमान समय में यहाँ पर आग्रा के प्रसिद्ध शास्त्रीय गायक को विशेषरुप से बुलाकर उनके संगीत का आनंद लिया गया था और उनका संमान भी किया गया था ।

– प्रफुल खरसाणी

श्री स्वामिनारायण म्युजियम मे भेट देनेवालों की नामावलि अप्रैल-२०१५

रु.५१,०००/-	प.भ. अपूर्वभाई अनंतराम धोलकीया, मुंबई
रु.१०,००१/-	प.भ.एच.आर.शेलत, अमदावाद
रु.५,१२१/-	प.भ. भरतसिंह बालुबा, समला, ता. लींबडी
रु.५,१००/-	प.भ. घनश्यामभाई गोरधनभाई पटेल, वहेलाल
रु.५,००१/-	प.भ.निहार, देवलभाई पटेल, वर्षगांठ निमित्ते, वस्त्रापुर
रु.५,००१/-	प.भ. सुरेशभाई शीवजीभाई राबडीया, मांडवी
रु.५,०००/-	प.भ. पटेल लीलाबहन गोरधनभाई डुबकढतल
रु.५,०००/-	प.भ. नरेषभाई देवचंदभाई डोबरीया पुत्र जन्म के निमित्त हीरावाडी-बापूनगर
रु.५,०००/-	प.भ. मंगुबहन मथुरभाई पटेल, मोखासण
रु.५,०००/-	जलाराम एन्टर प्राईझ, वटवा जी.आई.डी.सी.
रु.५,०००/-	गं.स्व. गौरीबहन अमृतभाई पटेल कृते - जतीन तथा रितेष, मणीनगर
रु.५,०००/-	प.भ. दर्शक शाह प.पू. बड़े महाराजश्री के जन्मोत्सव प्रसंग पर, हैदराबाद
रु.५,०००/-	प.भ. कांतिलाल नारणदास पटेल अक्षयतृतीया ता. २१-४-१५ के निमित्त हांसोल (पुंधरा)
रु.५,०००/-	प.भ. मीनाबहन के. जोषी, बोपल।
रु.५,०००/-	प.भ. कमलेशभाई एच. शाह, अमदावाद

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायण देव की मूर्ति के अभिषेक की नामावलि (अप्रैल-२०१५)

ता. ७-४-१५	आई.एस.एस.ओ. श्री स्वामिनारायण मंदिर सीडनी दशाब्दी महोत्सव तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के जन्मोत्सव प्रसंग पर कृते छोटे पी.पी. स्वामी तथा राम स्वामी।
ता. १२-४-१५	प्रात: जगदीशभाई वाघजीभाई पटेल नवा वाडज, वर्तमान में वाघोडीया। सायंकाल: चेतनाबहन सुरेशकुमार पटेल - सुरत।
ता. १७-४-१५	अ.नि. प्रवीणकुमार बाबुभाई पटेल झूलासणवाला कृते जेस, रीटाबहन, राणीप।
ता. १९-४-१५	नीताबहन हिंमतलाल भावसार, बापूनगर।
ता. २४-४-१५	शामजी करशन पटेल दहींरा, कच्छ।
ता. २६-४-१५	अरविंदभाई पी. ठक्कर, शीतल ओटो।

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये - श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला २० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है।

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. बड़े महाराजश्री प्रात: ११-३० को आरती उतारते हैं।

संप्रदाय में एकमात्र व्यवस्था स्वामिनारायण म्युजियम में महापूजा। महाभिषेक लिखवाने के लिए संपर्क कीजिए।

म्युजियम मोबाईल : ९८७९५ ४९५९७, प.भ. परषोत्तमभाई (दासभाई) बापुनगर : ९९२५०४२६८६

www.swaminarayanmuseum.org/com • email:swaminarayanmuseum@gmail.com

सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

अमदावाद के केशव पंडित

(शास्त्री हरिप्रियदासजी, गांधीनगर)

(गतांक से आगे)

''आजे मीठानी कोठ़डी समुद्रनो ताग लेवा माटे आवी छे । अमदावाद में विराजमान स्वामिनारायण भगवान से केशव पंडित विवाद करने के लिये आये हुये थे । सभा में केशव पंडित को जैसा तैसा बोलते देखकर जेसिंगभाई खड़े हो गये, उन्हें महाराज ने बैठा दिया केशव पंडित को ऐसा हुआ कि अब हम जीत जायेंगे । कारण यह कि ''इन बहुतायतों की डर थी अब डर का प्रश्न नहीं है । लेकिन स्वामिनारायण बड़े भोले हैं । एक बहादुर खड़ा भी हुआ तो उसे भी बैठा दिये । अब निर्भक होकर केशव पंडित जैसा-तैसा बोलने लगे । प्रभु से कहे कि आप क्या पढे हैं ? महाराजने कहा कि हम कुछ भी नहीं पढे हैं । आपको सभी साक्षात् भगवान कहते हैं । महाराजने कहा कि इन उपस्थित सभाजनो से आप पूछिये । हमारे साथ झगडने से क्या फायदा ।

स्त्री-पुरुष सभी लोग आपकी आज्ञा के अनुसार क्यो चलते हैं । श्रीजी महाराज कहते हैं कि आप सभी से मना करदो कि कोई स्वामिनारायण की बात नहीं मानेंगे । हमें बताईये कि ये सभी लोग आपके अधीनस्थ क्यों हो गये हैं ? श्रीजी महाराज कहते है कि हमें भी खबर नहीं कि ये लोग हमारे अधीनस्थ क्यों हो गये हैं ? हम किसी से कहे नहीं है कि आप लोग हमारे अधीन रहो । फिर भी ये लोग मेरे अधीन हैं ।

यह सुनकर केशव पंडित को हुआ कि स्वामिनारायण कुछ पाछा लिखा नहीं है, अब इससे ऊपर विजय मिलना बड़ा सरल है । मैं चार वेद जानता हूँ । स्वामिनारायण को कुछ आता ही नहीं है । इसलिये वह संस्कृत बोलने लगा । संस्कृत में प्रश्न पूछने लगा । यह सुनकर श्रीजी महाराजने कहा कि आप यह सब क्या बोल रहे हैं हमें समझ में नही आता है । हम संस्कृत जानते नहीं है, कुछ पढे नहीं हैं । आप संस्कृत नही जानते ? बिलकुल नहीं जानते । ये आपके शिष्य संस्कृत जानते हैं - जब मैं आया उस समय सभी संस्कृत बोल रहे थे वेद स्तुति कर रहे थे । यदि आप संस्कृत नहीं जानते तो आपके शिष्य वेद स्तुति कैसे कर सकते हैं । श्रीजी महाराजने कहा कि ये लोग कहीं से सीख कर आये होंगे । हमें जानकारी नहीं । आप झूठ बोल रहे हैं । सत्यवात कह दूं ऐसा श्रीजी महाराजने कहा । वह जो बीच में बालक बैठा है वह इन सभी का गुरु है । वही इन सभी को वेद पढाया है । महाराजने जिस बालक के ऊपर अंगुली किया वह पुराना मैलाकुचैला कपड़ा पहना था, सोलह वर्ष का वह बालक था । केशवपंडित को ऐसा हुआ कि इस बालक में कोई दम नहीं है । इसके शरीर - कपडे का कोई ठिकाना नहीं, क्या पता किस जातिका होगा ? स्वामिनारायण इसे कहते हैं कि यही सभी को वेद सिखाया है । प्रभु के कहने से बालक सभा में नजदीक आया । केशव पंडित से भगवानने कहा कि आपको जो कुछ पूछना है इससे पूछो । तुम वेद जानते हो ? हाँ, हाँ मैं वेद जानता हूँ । पंडित को हुआ कि जिसके शरीर-कपडे का भान नहीं है वह वेद कैसे जानता होगा । जानते हो तो बोलो । वह बालक बोलने लगा । ऋग्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, यजुर्वेद - चारों वेदो का मंगलगान करने लगा । यह सुनकर पंडितजी बोलने लगे । प्रभु से पंडित कहने लगा कि आपने यह अच्छा

नहीं किया । अधर्म किया है । क्या हुआ ? ऐसे मैले-कुर्चले गन्दे आदमी को वेद सिखाया जाता है क्यां ? महाराज ने कहा कि पंडित आप कैसे हैं ? हम संस्कृत जानते ही नहीं, तो इसे कैसे सिखा सकते हैं । आप के जैसे कोई पंडित रुपये लेकर इसे सिखाये होंगे ।

कुछ समय के बाद पंडित को ऐसा हुआ कि इस बालक की परीक्षा क्यों न करुँ । तूं जिन भाषाओं का गान किया है उनका अर्थ कर । यह सुनते ही वह बालक अर्थ करने लगा । कि इसके बाद एक अर्थ विवरण के साथ कहने लगा । पंडितजी घबड़ाने लगे । वह बालक बोल नहीं रहा था बल्कि भगवान स्वामिनारायण उसे बुला रहे थे । महाराज पंडितजी को यह बता रहे थे कि केवल पुस्तक रटने मात्र से कोई पंडित नहीं होता उसका ज्ञान क्रिया के विना भार स्वरुप है । आचरण में भी होना चाहिये, भक्ति भी जीवन में उतनी ही आवश्यक है । पंडितजी के मन में प्रकाश हुआ । भगवान के प्रतिदृढ विश्वास हुआ । प्रभु के प्रतिनिश्चय होने लगा । पंडितजी मन में ऐसा सोचने लगे कि स्वामिनारायण को मूर्ख साबित करके यहाँ से भगा देंगे । लेकिन उससे विपरीत हुआ केशवपंडित अपने स्थान से उठे और महाराज के चरणों में जाकर गिर पड़े । उनके ज्ञान का भंडार प्रभु के चरणों में अर्पित हो गया ।

पंडितजी के ज्ञान की दिशा अब बदल गयी, उनके हृदय में भक्ति का उदय होने लगा । ज्ञान के साथ यदि भक्ति हो तो अद्‌भुत आनंद का अनुभव होने लगता है । जिंदगी सुखमय बन जाती है । अब वे प्रभु की स्तुति करने लगे । हे प्रभु ! आप निमाराम कारण है, वेद का प्रवर्तन करने वाले आप ही हैं । हे विश्वपति ! धर्म के साथ भक्ति का प्रवर्तन करने के लिये ही आप प्रगट हुये है । हे नारायण मुनि ! हे विश्वंभर हे भगवान ! मेरे इस अपराधको माफ कीजिये, क्षमा कीजिये ।

श्रीजी महाराज उन्हें अभयदान देदिये । एकादश नियम धारण करवाये । केशव पंडित को कंठी बांधे । पंडितजी इससे भी संतुष्ट नहीं हुए और कहने लगे मुझे आपका साधु बनना है । सामने जो साधु बैठे हैं उन्हीं के साथ हमें बैठना है । वहाँ पर पंडित केशवकी माता खडी होकर कहने लगीं कि हे महाराज ! मेरे बेटे को आप साधु मत बनाइये । कारण यह कि मेरा एक ही बेटा है, मुझे इसका विवाह करना है । महाराजने कहा कि पंडितजी आपको साधु बनने की कोई आवश्यकता नहीं हैा । आपके अपने शास्त्र के अहं को छोड़कर भक्ति भी करनी ही, शास्त्र के अभ्यास के साथ भक्ति करने से आपका कल्याण होगा । घर जाइये अपनी माताजी की सेवा कीजिये और मेरी भजन करते रहियेगा । हे महाराज ! हमे आप साधु न बनाये, मैं माता की सेवा भी करुंगा लेकिन आप से एक विन्ती है कि जब भी आप अमदावाद आये तब हमारे घर भोजन करने अवश्य पधारें । इस आमंत्रण को महाराज स्वीकार कर लिये ।

प्रिय भक्तों ! केशव पंडित के इस व्याख्यान से काफी ज्ञान मिलता है । थोड़ा गहराई से विचार कीजियेगा । भगवान की भक्ति के विना ज्ञान का कोई महत्व नहीं है । इसीलिये प्रभुने शिक्षापत्री में कहा है कि - भगवान की भक्ति या उपासना न हो तो बड़े-बड़े विद्वान भी अधोगति को प्राप्त करते हैं । इसलिये भगवान का दृढ आश्रय करके भक्ति करनी चाहिये । इसी में मानवजीवन की सार्थकता है ।

●

अपक्षीयों की आग से सावधान रहना

- नारायण बी. जानी (गांधीनगर)

पंच महाभूत में "तेज" का भी नाम है । तेज का मतलब प्रकाश, अग्नि । यह अग्नि बहुत आवश्यक है । लेकिन जब यह अग्नि अपनी मर्यादा में हो तभी, जैसे दीपक के रुप में, चूल्हा में हो तो जीवनो पयोगी धन है,

जब यही अग्नि आग के रुप में परिवर्तीत होती है तो विनाशकारक हो जाती है। एक विस्फोटक आग होती है, एक जंगल में लगी आग होती है। दूसरी आग होती है - आन्तरीक आग जैसे - काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार इत्यादि। ए सभी जब उद्दीप्त होते हैं तब मन को विकृत बना देते हैं।

बाहर की आग को फायर ब्रिगेड इत्यादि साधनो से शांत किया जा सकता है, लेकिन हृदय में लगी आग को शातं करने के लिये अथाक श्रम की जरुरत पड़ती है, फिर भी शातं नहीं होती। जब मन विकृत स्थिति को प्राप्त हो जाय तब उसे शांत करने के लिये - भक्ति का सहारा लेना चाहिये। इसके लिये एक दृष्टांत देखिये -

एक पवित्र गुरु के आश्रम से एक शिष्य ध्यान करना सीखा। उस में उसे अच्छी सिद्धी मिली - परिणाम स्वरुप उसके हृदय में भगवान प्रत्यक्ष दिखाई देने लगे। उसके मन में हुआ कि जो मेरे मन में हुआ है उसका बाहर के लोगो को भी लाभ दिया जाय। इससे जगत में ख्याति भी मिलेगी। इसके लिये वह नर्मदा के किनारे एक मंदिर बनवाया। उसके हृदय में जो स्वरुप दिखाई दिया था, उसी स्वरुप को मंदिर में प्रतिष्ठित किया। अब उसके हृदय में जो स्वरुप दिखाई दे रहा था वह अदृश्य हो गया। यह वात अपने गुरु से जाकर कहे, हे गुरुदेव ! यह कैसे हो गया। मैंने किसी का खराब नही किया। थोड़ी देर तक विचार करके गुरुदेव ने कहा कि जो तुम्हारे मन में आग बैठी है वह कीर्ति की चाहना के रुप में नहीं, अभी भी अधिक नुकशान नहीं हुआ है। यदि अभी भी सावधान नहीं होगा तो बहुत हानि की संभावना है। तुम्हारी सारी साधना नष्ट हो जायेगी। अब तुम्हारे मन का मार्जन करना पडेगा। उसके लिये जो मंदिर बनवाया है उसमें दोनो समय झाड़ू लगाना और उसी धूल में लोटना इसके अलांवा जो भी भक्त आवे उन्हें वन्दन करना। इस तरह करते हुये एक वर्ष जब बीत जाय तब मेरे पास आना। मैं तुम्हे पुनः मार्ग बताऊँगा। गुरु की आज्ञा प्राप्त करके एक साल तक वैसा ही किया। बाद में पहले जैसी स्थिति को प्राप्त हो गया और ध्यान में मूर्ति का दर्शन होने लगा। इस लेख में ''हृदय की आग ? अर्थात् क्या ?'' इससे आप समझ गये होंगे कि हृदय में कैसी आग जलती रहती है। इस आग को शांत करने के लिये भक्त, संत की आज्ञा में रहना आवश्यक है। हृदय की आग से दूर होकर मन की शांति के साथ अन्य लाभ भी मिलेगा।

कभी ऐसा अनुभव हुआ होगा कि - माला फेरते हुये, आरती करते हुए, दर्शन करते हुए, प्रसाद बांटते हुए, उत्सव के समय, मूर्ति प्रतिष्ठा के समय पदार्पण या पारायण के समय ऐसी आग हृदय में एकाएक सुलगने लगती है। उस समय मन की भूमि पर उगे हुये सद्विचार रुपी वृक्षो में मीठे फल को आत्मा चरण नहीं सकती। अतः पतन हो जाता है।

स्वामिनारयण भगवानने गढडा मध्य के २५ वें वचनामृत में मलिन वासना को टालने के अनेकों उपाय बताये हैं। जिस में सेवा को प्रधान बताया है।

जैसे उकाखाचर को सेवा करने का व्यसन हो गया था। इसी तरह भगवान तथा भगवान के संतो की सेवा का जिन्हें व्यसन हो गया हो वह एक क्षण भी सेवा के विना नहीं रह सकता। बाद में उसके अन्तःकरण की सभी मलिन वासना का नाश हो जाता है।

उपरोक्त बताये गये उपाय से अपने मन का मार्जन करके सद्विचार रुपी वृक्षों को लगाकर भक्ति-भजन रुपी तथा सत्संगरुपी पानी से अभिसिंचन करके सुख-शांति तथा मोक्ष के मीठे फल की प्राप्ति हो सकेगी। तभी मनुष्य जन्म की सार्थकता है। यह वात तो स्पष्ट है कि ''जिस का मन सुधरा उस मोक्ष सुधरा'' शास्त्र में लिखा है कि -

''मन एक मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः।''

भक्तिसुधा

प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वचन में से
"ज्ञानी तो स्वयं बनना पड़ता है"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

हम कथा श्रवण करते हैं, सत्संग करते हैं फिर भी जितना जानना चाहिये उतना जान नहीं सके। हम शास्त्र का वांचन करते हैं, भजन, कीर्तन, प्रार्थना, नाम स्मरण सबकुछ करते हैं फिर भी ज्ञानी नहीं हो सके । वैसे तो दुनिया में बड़े-बड़े पंडित हो गये, ऊपर-ऊपर से वांच कर वे विद्वान भले हो गये हों ऐसा मान लिया जाय तो इससे अज्ञानता बढेगी और अहंकार बढेगा। इस प्रकार का अहंकार अपनी निर्मानीपना को खत्म कर देगा। हमें कठोर बना देता है। हम सब सुनकर या ग्रहण करके अपने वर्तमान में भी परिवर्तन होना चाहिये। हम भोजन पदार्थ का वर्णन कर सकते हैं लेकिन स्वाद का वर्णन विना भोजन किये वर्णन नहीं कर सकते । इसका मतलब यह है कि ज्ञानी बनना हो तो पुरुषार्थ स्वयं करना होगा। सच्चा भक्त बनना तो अन्तर की वात है। अन्तर में उतर कर देखना-पड़ेगा। हम सुनते है, देखते है, वांचते हैं इसे स्मृति कही जायेगी ।इससे याद शक्ति बढती है। इसे ज्ञान समझलेना बड़ी भूल है । वांचकर याद रखना मुश्किल नहीं है। सुनी हुई वात का मनन, निदिध्यासन करके उसमें से सागग्रहण करना है। स्वयं को इमानदार साबित करना होगा। शातं से, इमानदारी से अन्दर ध्यान करना होगा। हम स्वयं को वंचित करते हैं। यदि अन्तर की शांति चाहिये तो अपने अन्तःकरण से सभी प्रकार के विकार को निकालना पड़ेगा। स्यं यदि अच्छी नदी लेना चाहते हों तो शरीर से सभी आभूषण उतारना पड़ेगा। शरीर के ऊपर भारी वस्त्र, आभूषण, चप्पल इत्यादि पहनकर कोई सोता नहीं है। नींद भी नहीं आयेगी। यदि चिर निद्रा की इच्छा हो तो शांति की आवश्यकता होगी। इसी तरह शांतिमय जीवन जीना हो तो मान, यश, प्रतिष्ठा सभी का त्याग करना पड़ेगा। अंतिम समय में राग-द्वेषादि अन्तर में रहेंगे तो कष्ट देने वाले होंगे। परंतु हम अपने अहं को दोषित करते हैं अपने अन्तर अहंकार बैठा है यह भावना मात्र है, हम उसे पोषण दे रहे हैं। बालक जब जन्म लेता है तब वह कितना निर्लिप्त रहता है, सरल भाव रहता है। अहंकार नहीं था बल्कि अहंकार वाला स्वभाव बना दिये हैं। एक महान राजा था उसके पास सब कुछ था लेकिन मन में शांति नहीं थी। वह एक संत को मिला अपने विचार को उनके सामने रखा और कहा कि सभी कहते है कि आप अपने अहंकार को पहले दूर कीजिए बाद में शांति मिलेगी। संत ने कहा कि आप अपने अहंकार को साथ लेकर कल पुनः आइयेगा। उस अहंकार को मैं मारडालूंगा। राजा के मन में हुआ कि अहंकार कोई वस्तु है क्या ? फिर भी संत ने कहा है इस लिये संत के पास दूसरे दिन जाता है। संतने कहा कि आप अपनी आंख को बंद कीजिये और भीतर उसे देखिये जब अहंकार मिल जाय तब उसे मैं लकड़ी से मार डालूंगा। इसके बाद संत ३० से ४० मिनट तक टेन्शन देखा बाद में ४-५ घन्टे बीत गये अब चेहरे से टेन्शन गायब था। राजा एकदम शांत हो गया। अब उसे यह अनुभव होने लगा कि जो भी है वह अहंकार का भाव आने से है यद्यपि ऐसा कुछ होता ही नहीं। हम आत्मा के ऊपर अहंकार का आवरण डाल दिये हैं, इसलिए अन्तर में झांकना जरुरी है। सब में से अंधकार को दूर नही किया जा सकता, इसी तरह

प्रकाश को भरा नहीं जा सकता । परंतु प्रकाश को ला सकते हैं किस तरह ? जब प्रकाश को फैलाना होतो कक्ष में दीपक जला दिया जाय और जब प्रकाश को बाहर निकालना हो तो दीपक को बुझा दिया जाय । इसका मतलब प्रकाश की अनुपस्थिति ही अन्धकार है।

इसी तरह अंधकार की तरह अहंकार हट जाय तो आत्मा भी अनुभूति होने लगेगी । भगवान तथा स्वयं के अलांवा किसी अन्य को भीतर का ज्ञान नहीं होता । यदि किसी को फोड़ा हुआ तो उसे ढांकने से बिगड़ता है, भीतर-भीतर बिगड़ जाता है । भीतर से अधिक बिगडजाय तो शरीर में फैलने लगता है इसी तरह मात्र वांचने से या सुनने से ज्ञानी नहीं हो पाते बल्कि हम उस ज्ञान को किस तरह स्वीकार करते हैं वह जरुरी है । परमात्मा की प्राप्ति के लिये स्वयं को पुरुषार्थ करना पडेगा । स्वयं भीतर झांकना होगा । भीतर के अंधकार को बाहर निकालना होगा । काम-क्रोध-लोभ-मोह से रहित होकर एकनिष्ठा से आत्म समर्पित भाव से भगवत भक्ति करने से ही परमतत्वकी प्राप्ति संभव है।

●

लोभ

- पटेल लाभुबहन मनुभाई (कुंडाल, त. कडी)

गिरधारी रे सखि ! गिरधारी,
मारे निरभे अखूटनाणुं गिरधारी ।
खरच्युं न खूटे एने चोर न लूटे,
दामनी पेठे रे, गांठे बांध्यु नव छूटे ॥

चाहे जितना सत्संग किया हो परंतु जीवात्मा के साथ जुड़ी हुई लोभी प्रकृति हटती नहीं है । जिसे हम सत्य धन मानकर बैठे हैं वह नाशवंत तथा दुःखदायी है । आज से कल नष्ट होनेवाला है । ''एकदिन करोड़पति तो दूसरे दिन रोड़ पति'' । ऐसा बहुत देखा गया है । ऐसे नाशवंत धन को व्यवहार में ले तो समाप्त होने वाला ही है । चोर इसे चुरा ले जाये । लेकिन अविनाशी धन अपने हाथ में आ जाय तो चाहे जितना व्यवहार में लीजिये वह खुटता ही नहीं । वह अखूट धन है परमात्मा की दिव्य मूर्ति -

रे श्याम तमे साचुं नाणुं,
बीजुं सर्वे दुःखदायक जाणुं ।

अनंत कोटि ब्रह्मांड में एक मात्र सच्चा धन स्वामिनारायण भगवान की मूर्ति है, दूसरा धन दुःखदायक और क्षणिक है । ऐसे परमात्मा को प्रकरेण जगत के अन्य स्थानो पर भटकने की क्या जरुरत । अपने घर में ऐसा आसुरी द्रव्य न आजाय इसका ख्याल रखना चाहिये । अधर्म का पैसा हमें कभी सुखी नहीं होने देता । मनुष्य का यह स्वभाव है कि खजाना लूटकर सूईका दान करता है और स्यं को निर्दोष मानता है । इस तरह अनीति के धन का दान प्रभु स्वीकार भी नही करते । नीति से अर्जित धन भी अपना नहीं होता, इसी लिये तो ऐसे धन में से २०% प्रभु को अर्पित करने की वात है । श्रीजी महाराजने अपने आश्रितों को आज्ञा किये है कि २०% या १०% प्रतिशत अपनी स्थिति के अनुसार प्रभु को अवश्य अर्पण करे ।

यदि १० प्रतिशत या २० प्रतिशत प्रभु को अर्पण किये विना अपने घर में धन का उपयोग करना चोरी कही जायेगी । इसे आसुरी संपत्ति कही जायेगी ।

भगवान तथा संत की आज्ञा में रहने से सुख एवं शांति मिलेगी । मेमका गाँव के रामजी को काला कपास का धंधा था । प्रातः यह १०% प्रतिशत दान करते थे । एकबार उनके यहाँ आग लग गई नौकर कहने आया तो उन्होंने कहा कि सब संपत्ति महाराज की है । वे रक्षा करेंगे, मैं शांति से सो रहा हूँ, तूं भी शांति से सोजा । विना कुछ किये आग बुझ गई क्योंकि अपनी कमाई में से पूरा-पूरा भगवान को अर्पण करते थे ।

बस यही समझने की जरुरत है - वह यह कि जो कुछ है वह सब महाराज का है, उन्हीं के लिये व्यवहार लेना है । यह भाव हो तो कभी कोई कमी नहीं होगी ।

सत्संग समाचार

अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर श्री नरनारायणदेव के चंदन के वस्त्रों का दर्शन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में बिराजमान परम कृपालु श्री नरनारायणदेव आदि देवों का वैशाख शुक्ल पक्ष-३ अक्षय तृतीया से चंदन के सुगंधित शीतल वस्त्रों के दर्शन करवाये गये। दर्शन करने मात्र से हृदय में शीतलता प्रवेश कर जाती है। ऐसे दर्शन ठाकुरजी के पूजारी संतगण करवाते हैं। हरिभक्तों ने ऐसे दिव्य दर्शन करके जीवनको धन्य बनाया।

(शा.स्वा. नारायणमुनिदासजी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर गुलाबपुरा का ६० वाँ पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से एवम् समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा अ.नि. स.गु.शा. स्वा. हरिस्वरुपदासजी के मार्गदर्शन से अ.नि.प.भ. नारणभाई मोहनदास पटेल तथा अ.नि. जोईताबाई की पुण्य स्मृति में श्री स्वामिनारायण मंदिर में ता. ६-४-१५ को धूमधाम से मनाया गया।

प्रात: ६-०० बजे ठाकुरजी का अभिषेक संतो द्वारा होने के बाद संतोने कथा-वार्ता कीर्तन भक्ति की। अन्नकूट आरती तथा महाप्रसाद का लाभ दिया।

दोपहर ४-०० बजे गाँव में ठाकुरजी की नगरयात्रा में गाँव से तमाम भक्तों को जोडा गया। समग्र प्रसंग में प्रमुखश्री, कोठारीश्री, आदि गाँव के छोटे बड़े सभीने सेवा की।

प.भ. पटेल गांडालाल नारणदास तथा अ.नि. त्रिकमलाल चरणदास पटेल परिवारने यजमान बनकर लाभ लिया। (अल्पेश पटेल, गुलाबपुरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कुबडथल

श्री धर्मकुल आश्रितश्री स्वामिनारायण मंदिर कुबडथल में चैत्र शुक्ल पक्ष-९ के श्रीहरि प्राकट्योत्सव दिन पर शाम को ८-०० से १०-०० धू,न भजन, कीर्तन, धूमधाम से किया। १०-१० श्रीहरि का प्राकट्योत्सव आरती में तमाम हरिभक्तोंने भाग लिया।

(श्री नरनारायणदेव युवक मंडल, कुबड़थल)

अहमदाबाद से छपैयाधाम में यात्रा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा समग्र धर्मकुल परिवार के आशीर्वाद से तथा प.भ. नारणभाई की प्रेरणा से आगामी श्री नरनारायणदेव द्विशताब्दी महोत्सव के उपलक्ष में बापुनगर के ५० हरिभक्तों ने छपैयागांव की यात्रा ता. १-२-१५ से प्रारंभ से ता. ६-४-१५ के छपैया तक पदयात्रा पूर्ण की। रास्ते में आनेवाले तीर्थस्थानो का दर्शन किया गया।

प.पू. बड़े महाराजश्रीने रास्ते में फोन द्वारा समाचार पूछकर सबको आशीर्वाद दिये। (गोरधनभाई सीतापरा)

सत्कार समारोह जमीयतपुरा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्रीहरि के चरणो से अंकित प्रसादी की दिव्य भूमि जमीयतपुरा। प्रभु हनुमानजी मंदिर में ता. २२-३-१५ को सुबह को ९-०० से १२-०० तक श्री नरनारायणदेव महोत्सव के उपलक्ष में सुंदर सत्कार समारंभ का आयोजन किया गया।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ सानिध्य में प्रासंगिक सभा में अहमदाबाद मंदिर के पू. महंत स्वामीने प्रासंगिक उद्बोधन किया। अंत में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने श्री नरनारायणदेव महोत्सव में सेवा करनेवाले, प्रत्येक गांव के तथा अहमदाबाद शहर के उपस्थित सभी स्वयंसेवको को तथा समिती के सभ्यों को अपने हाथों से लिखा आशीर्वाद पत्र प्रदान किया गया। इस प्रसंग पर कालुपुर, नारायणघाट तथा कोटेश्वर गुरुकुल से संतगण पधारे थे।

पूरव पटेल द्वारा कीर्तन भक्ति का आयोजन किया गया। शा. छोटे पी.पी. स्वामी (महंतश्री, गांधीनगर से-२) सभा का संचालन किया।

यहाँ के महंत स्वामी विजयप्रकाशदासजी तथा

युवक मंडलने भोजन प्रसाद की सुंदर व्यवस्था की।

(गोरधनभाई सीतापरा)

श्री स्वामिनरायण मंदिर माणेकपुरा २८ वाँ वार्षिक पाटोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर माणेकपुरा का २८ वाँ पाटोत्सव ता. २५-३-१५ को धूमधाम से मनाया गया। इस प्रसंग पर १२ घंटे की अखंड महामंत्र धून की गयी।

पाटोत्सव प्रसंग में अहमदाबाद कालुपुर मंदिर के पू. महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी, नारणघाट मंदिर के महंत स्वामी देवप्रकाशदासजी तथा गांधीनगर (से-२) के महंत स्वामी शा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी आदि संतोने पधारकर भगवान की कथावार्ता की। ठाकुरजी की अन्नकूट आरती करके सभा में हरिभक्तों को आशीर्वाद दिये । संतोने युवानो का व्यसन मुक्ति के लिए सलाह दी।

ता. ४-४-१५ को चैत्र शुक्ल पक्ष-१५ श्री हनुमानजी की सुबह ६-०० से ९-०० तक हनुमान चालीसा का पाठ करके श्री हनुमानजी का पूजन आरती तथा अन्नकूट का भोग लगाकर आरती की । जिसके यजमान भरतभाई गांडाभाई चौधरी थे।

(डाह्याभाई शंभुभाई चौधरी)

अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव ताबा के सबसे आधुनिक सुविधा वाले मल्टी स्पेश्यालीटी हेल्थ होस्पिटल

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा आशीर्वाद से कलोल में स.गु.शा. स्वा. प्रेमस्वरुपदासजी द्वारा श्री नरनारायणदेव के हस्तक सबसे पहला आधुनिक सुविधा सम्पन्न मल्टी स्पेश्यालीटी होस्पिटल वर्तमान में कार्यरत है । थोड़े समय पहले ही प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री इस होस्पिटल में पधारे थे । होस्पिटल का निरीक्षण करके बहुत प्रसन्न हैं। आयोजित प्रासंगिक सभा में कहा कि वर्तमान समय में शिक्षण तथा समाज सेवा अत्यंत आवश्यक है । इस प्रकार की अद्यतन होस्पिटल वर्तमान समय में सभी के लिए उपयोगी है। स.गु.शा. स्वा. प्रेमस्वरुपदासजी तथा ट्रस्टी मंडल के आशीर्वाद दिये।

: होस्पिटल में उपलब्धसेवायें :

● पिडीयाट्रीक विभाग ● गायनेक विभाग ● जनरल सर्जरी विभाग ● डेन्टल तथा गेस्ट्रो एन्ट्रलोजी विभाग ● न्युरो लोजी ● कार्डियाक विभाग ● ओर्थोपेटिक विभाग ● रेडियो लोजी तथा पेथोलोजी विभाग ● ट्रोमा तथा कीट्रीकलकेर विभाग ● ICCU तथा इमर्जेन्सी विभाग ● चिकित्का २४ घंटे उपलब्द है ● आधुनिक आपरेशन विभाग

श्री स्वामिनरायण विश्व मंगल गुरुकुल कलोल नेशनल हाईवे मो. : ९६३८०५२५२५

अंक प्राप्त न होने पर सूचन

''श्री स्वामिनारायण मासिक'' प्रत्येक महिने की ११ तारीख को नियमित रुप से प्रत्येक सभ्यों को पोस्ट द्वारा भेज दी जाती है। तो भी २० तारीश तक यदि नह प्राप्त हो तो स्थानिक पोस्ट में जाज करके जानकारी दे यदि स्टोक में उपलब्धहोगी तो पुनः पोस्टके माध्यम से भेजी जायेगी।

संप्रदाय के इतिहास में आचार्य परंपरा में सर्व प्रथम प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीने अमदावाद से धरियावद तक हेलीकोप्टर से सवारी की

श्री नरनारायणदेव देश पीठस्थान के प.पू. आदि आचार्य अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री से लेकर वर्तमान आचार्य महाराजश्री तक का जीवन सादगी से भरा हुआ था, सभी यात्रायें भी सादगी के साथ संपन्न की हैं। इसका एक ही कारण था कि अपने भक्तों को किस तरह प्रसन्न सुखी किया जा सके। कारण यह कि श्रीहरि के ही पुत्र हैं। जैसे भगवान वैसे ही उनके वंशज होंगे, यह सभी रहस्य हम सभी को समझना चाहिये। ऐसा समझलेने से अपना बेड़ा पार हो जायेगा।

धरियावद (राजस्थान) के पर्वतीय प्रदेश में अति सुंदर तीन शिखरवाला भव्य मंदिर बनवाया । उसी के दशाब्दी महोत्सव प्रसंग पर स.गु. महंत ब्र. स्वा. वासुदेवानंदजी तथा स्थानिक हरिभक्तोंने दृढ संकल्प किया था कि इस भव्य प्रसंग पर हमारे प.पू. महाराजश्री को ऐसी असह्य गरमी में बिना किसी तकलीफ के यहाँ लाना है । आग्रह पूर्ण निमंत्रण पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के साथ पू. शा.स्वा. आत्मप्रकाशदाजी तथा पू.

शा. पी.पी. स्वामी (जेतलपुर) आदि संत मंडल के साथ प्रथमवार अहमदाबाद से धरियावद हेलिकोप्टर द्वारा ता. १९-४-१५ शाम को शुभ आगमन किया गया । वक्तापद पर ब्र. स्वा. हरिस्वरुपानंदजी थे । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से सर्वोपरि श्री घनश्याम महाराज, श्री राधाकृष्णदेव का महाभिषेक धूमधाम से किया गया । प.पू. आचार्य महाराजश्रीने सभा में उपस्थित हजारो संत-हरिभक्तों को आशीर्वाद दिया । समग्र आयोजन छपैया के महंतश्री तथा धरियावद के महंत ब्र. स्वा. वासुदेवानंदजी, उनके संत मंडल तथा जेतलपुर के संतने किया था। शा. भक्तिनंनदास

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर हलवद (स्वारीवाडी)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री तथा प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवालाश्री के आशीर्वाद से मंदिर का २३ वाँ पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया । प्रसंग पर अहमदाबाद से प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवालाश्री पधारी थी । ठाकुरजी की आरती करके समस्त बहनों को आशीर्वाद दिये । ध्रांगध्रा के सां. अ.नि. सीताबाई तथा अ.नि. सां. गौरीबाई का शिष्य मंडल, सां. कुंवरबाई आदि के तथा वहाँ के सां. मधुबाई, नीताबाई, तथा अंकितबाई तथा मनीषाबहनने सुंदर आयोजन किया था। (सां. हिराबाई ध्रांगध्रा)

श्री स्वामिनाराय मंदिर श्रीजीनगर १० वाँ पाटोत्सव मनाया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर श्रीजीनगर का १० वाँ पाटोत्सव ता. १२-४-१५ को धूमधाम से मनाया गया। हलवद मंदिर के संत मंडलने कथा वार्ता की । अंत में ठाकुरजी की अन्नकूट आरती तथा धून की गयी।

(जिज्ञेश राठोड)

श्री स्वामिनाराय मंदिर सुरेन्द्रनगर में आगामी दशाब्दी महोत्सव के उपलक्ष में सत्संग प्रवृत्तियां की गयी

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा मंदिर के महंत स्वामी प्रेमजीवनदासजी की प्रेरणा से तथा स.गु. कोठारी स्वामी कृष्णवल्लभदासजी के मार्गदर्शन से श्री स्वामिनारायण मंदिर सुरेन्द्रनगर के आगामी (कार्तिक कृष्णपद-२ सं. २०७२) दशाब्दी महोत्सव के उपलक्ष में भिन्न-भिन्न गाँवो में सत्संग प्रवृत्ति की गयी।

१५१ गाँवो में श्री स्वामिनारायण महामंत्र की १२ घंटे की धून मूली के रामगढ अखीयाणा, सरा, ध्रांगध्रा, मेथाण, भराडा, मालवण आदि गाँव में की गयी। समस्त आयोजन मंदिर के संतो तथा रणजीतगढ के पू. भक्ति स्वामीने किया।

<u>स्वच्छता अभियान-व्यसन मुक्ति पर्यावरण जागृति</u>

उपरोक्त समाजपयोगी कार्य निम्न सूचित गाँव में हुआ । जसापर, टींबा, खाखरा, खोलडीया, मेमका, बलदाणा, तथा बलोल में जाहेर सभा में शा. स्वा. श्रीजीप्रकाशदासजी (हाथीजण), को. स्वा. कृष्णवल्लभदासजी, पूजारी नित्यस्वरुपदासजी, शा.स्वा. प्रेमवल्लभदासजी तथा रविभगतने प्रसंगोचित माननीय प्रवचन द्वारा मानवजीवन की सार्थकता को समझाया । दोनो प्रसंग में सभा संचालन शैलेन्द्रसिंह झालाने किया।

सुरेन्द्रनगर मंदिर में कथा पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से, मंदिर के महंत स्वामी प्रेमजीवनदासजी की प्रेरणा से चैत्र शुक्लपक्ष-२ से चैत्र शुक्ल पक्ष-९ तक स.गु. शा.स्वा. श्रीजीप्रकाशदासजी (हाथीजण): के वक्तापद पर श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण का आयोजन किया गया । गं.स्व. भक्तिबहन शीयाणीया (खाखरा) परिवार द्वारा आयोजन किया गया । अनेकों धाम से संत पधारे थे । व्याख्यानकार स्वा. नित्यप्रकादासजीने किया था । सभा संचालन स्वा. प्रेमवल्लभदासजीने किया था । आयोजन का मार्गदर्शन कृष्णवल्लभ स्वामीने किया था। (शैलेन्द्रसिंह झाला)

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्रीहरि के प्रागट्योत्सव के निमित्त चैत्र शुक्ल-९ को सायंकाल ५-३० से ७-३० तक शोभायात्रा निकाली गयी थी । संपूर्ण प्रसंग को वर्तपत्र में तथा मीडिया के द्वारा प्रकाशित किया गया था । शोभायात्रा में मूली के महंत स्वामी भी जुडे थे ।

समग्र आयोजन को. कृष्णवल्लभ स्वामी के मार्गदर्शन में संपन्न हुआ था। (शैलेन्द्रसिंह झाला)

विदेश सत्संग समाचार

श्री स्वामिनाराय मंदिर कोलोनीया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से कोलोनीया श्री स्वामिनारायण मंदिर में ठाकुरजी के समक्ष श्री नरनारायणदेव जयंती फुलोत्सव संत हरिभक्तोंने धूमधाम से मनाया। सुवर्ण सिहांसन में बिराजमान ठाकुरजी के अलौकिक दर्शन हुए। सर्वत्र गुलाबी रंग ही था। धर्मकिशोर स्वामीने श्री नरनारायणदेव के प्राकट्यकी कथा सुनाई यजमान परिवार का सन्मान किया गया।

श्रीहरि प्राकट्योत्सव रामनवमी-मारुति यज्ञ चैत्र शुक्ल पक्ष-९ को श्रीहरि प्राकट्योत्सव धूमधाम से मनाया गया। दोपहर को श्रीराम जन्मोत्सव तथा मारुतियज्ञ विधिपूर्वक सम्पन्न हुआ। श्री रोहितभाई पंड्याने मारुतियज्ञ किया। जिसके मुख्य यजमान श्री कांतिभाई तथा जयश्रीबहन पटेल (फिलाडेल्पीया) थे। धर्मकिशोर स्वामीने सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान के प्राकट्योत्सव की अद्‌भुत कथा कही। कीर्तन भक्ति-धून का हरिभक्तों द्वारा आयोजन किया गया। १०-१० मिनट पर सर्वोपरि भगवान के जन्मोत्सव की आरती की गयी। हजारो हरिभक्तोंने दर्शन का लाभ लिया। स्वामीने यजमानो का सन्मान पुष्पहार पहनाकर किया।

(प्रविण शाह)

अक्षरनिवासी हरिभक्तों को भावभीनी श्रद्धांजली

देउसणा : प.पू. मथुरभाई शिवदास पटेल ता. २-२-१५ को श्रीरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं।

अमदावाद-जूनावाडज : प.भ. ईश्वरलाल अमरशीभाई पित्रोडा ता. २५-२-१५ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं।

उनावा : प.भ. किरीटभाई लालभाई पटेल ता. ७-३-१५ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं।

देउसणा : प.भ. भीखाभाई जीवीदास पटेल ता. ७-३-१५ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुई हैं।

अमदावाद : गं.स्व. वसुमतीबहन शांतिलाल पटेल ता. १५-३-१५ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं।

अमदावाद : प.भ. गोपालकृष्ण हरिकृष्ण शास्त्री (पेटलादवाला) प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से व्रतोत्सवनिर्णय तैयार करने वाले ता. २३-२-१५ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं।

ट्रेन्ट (ता. विरमगाँव: : प.भ. बालूबहन वेणीराम पटेल (शिहोरा) ता. २३-३-१५ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासीनी हुई हैं।

लंडन : डभासिया नानबाई परबत (सुखपर कच्छवाला) श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं।

कलिवलेन्ड (अमेरिका) : अपने इन्टरनेशनल स्वामिनारायण सत्संग ओर्गेनाइझेशन के वाईस प्रेसीडेन्ट देव-आचार्य के निष्ठावाले सक्रिय कार्य कर्ता प.भ. प्रकाशभाई भलाभाई पटेल (बारेजावाला) ता. १९-४-१५ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अमेरिका में अक्षरनिवासी हुए हैं। उनके अक्षरनिवासी होने से अमेरिका आई.एस.एस.ओ. सत्संग में पूर्ति न हो सकेगी। प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने उनके परिवार को श्रीहरि धैर्य तथा बल प्रदान करें और

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।

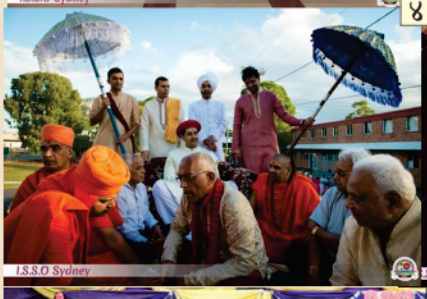

(१) शिकागो मंदिर के महापूजा में लाभ लेते हरिभक्त । (२) डिट्रोईट मंदिर में श्रीहरि प्रागट्योत्सव का दर्शन । (३) कोलोनिया में स्थानिक अमेरिकन हरिभक्त को प्रसादी देते हुए प.पू. पी.पी. स्वामी । (४) सीडनी आई.एस.एस.ओ. मंदिर के दशाब्दी पाटोत्सव प्रसंग पर ठाकुरजी का अन्नकूट दर्शन, सभा में, शोभायात्रा में तथा ठाकुरजी का अभिषेक करते हुए प.पू. महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री, रसोई घर में ढोसा बनाने का आनंद लेते हुए प.पू. महाराजश्री, बहनो के साथ प.पू. श्रीराजा तथा युवान मंडल के साथ प.पू. महाराजश्री तथा लालजी महाराजश्री का दर्शन । (५) पंचवटी कलोल नवनिर्मित शिखरी मंदिर का चल रहा निर्माण कार्य । जेतलपुर अक्षरफूल वाडी में आनंदानंद स्वामी तथा गंगाबा का स्मृति भवन (सूचित) ।

Registered under RNI NO-GUJHIN/2007/20220 "Permitted to post at Ahd. PSO on 11 the every month under postal REG. No. GUJ. 581/15-17 issued SSP Ahd. valid up to 31-12-2017

धरियावद (राजस्थान) श्री स्वामिनारायण मंदिर के
दशाब्दी महोत्सव प्रसंग की झलक ।

Jagadish Offset

Prafu